ISSN 2319-8095
PROGRESSIVE RESEARCH JOURNAL
VOL 9 No 01 DEC 2016

बालकों के विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का महत्व : एक अध्ययन

* डॉ. गिरीश कुमार द्विवे

बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं की उनके जीवन महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली की जटिलताओं और आज की सामाजि परिस्थितियों ने शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्य सहगामी क्रियाओं की भूमिका एवं महत्ता को अ अधिक बढ़ा दिया है। शिक्षार्थियों के शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास में सामज को बनाए रखने के लिए विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करना अ आवश्यक हो गया है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा शिक्षार्थियों में पठन–पाठन में रु उत्पन्न करने के साथ बालक के अन्दर स्वावलम्बन, नैतिकता तथा आत्म विश्वास जैसे गुणों भी विकसित करने में सहायता मिलती है।

आज के इस परिदृश्य में विद्यालय प्रशासन को विद्यालयों में पुस्तकीय शिक्षा साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाओं जैसे खेल–कूद, वाद–विवाद, नाटक, कला, संगीत अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन कर बालकों का बहुमुखी विकास करने हेतु सदैव तत्पर रह चाहिए।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालकों के अन्दर छिपी प्रतिभा को जागृत किया सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालक अपनी सशक्त अभिव्यक्ति करके अ सकारात्मक गुणों को अधिक विकसित करने का प्रयास करता है। कुछ पाठ्य सहगामी क्रिय बालकों को रोजगार के अवसर भी सुलभ कराने में सहायक सिद्ध होती हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालकों में शारीरिक, सामाजिक तथा भावनात्मक प को विकसित किया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं बालकों को जीवन में लक्ष्य प्रा करने के लिए प्रेरक का कार्य करती हैं।

प्रारम्भिक काल में विद्यालयों में बालकों को शिक्षकों के माध्यम से केवल पुस्तकीय ज्ञ प्रदान किया जाता था। विद्यालयों में प्राचीन काल से आज तक केवल शिक्षार्थी को ज्ञान शिक्षा दी जाती है। सनातन काल से ही बालकों के लिए केवल पाठ्य पुस्तकों को ही शिक्षा आधार माना जाता था। पाठ्य सहगामी क्रियाएँ छात्रों का सर्वांगीण विकास करने में सहाय होती हैं तथा उन्हें भावी जीवन में सफल बनाने हेतु अभिप्रेरणा प्रदान करती है। वास्तव में शि का उद्देश्य बालकों को केवल विषयों का ज्ञान कराना ही नहीं है, बल्कि छात्र के व्यक्तित्व पूर्ण विकास करना भी है। हमें विद्यालयों में इस बात का भी ध्यान रखना होगा कि छात्र

* सहायक आचार्य (शिक्षाशास्त्र) उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,इलाहाबाद

Scanned with OKEN Scanner

ज्ञानात्मक क्षमता का भी समुचित विकास हो। इसके लिए आवश्यक है कि बालकों को अपनी क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके।

बालको को विद्यालयो मे पुस्तको के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर उनके ज्ञान में अभिवृद्धि तो की जा सकती है परन्तु उनकी मनो–सामाजिक भावनाओं को विकसित नहीं किया जा सकता। बालकों की भावनाओ का विकास पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओ के द्वारा बालको की भावनाओं को सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है अपितु इसके साथ उनका शारीरिक, मानसिक, नैतिक व सांस्कृतिक विकास भी किया जा सकता है। बालकों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से उनके अन्दर छिपी प्रतिभा का प्रदर्शन करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान है, इनके द्वारा बालकों का सर्वांगीण विकास सम्भव होता है। इनके महत्त्व के विषय में माध्यमिक शिक्षा आयोग का विचार है कि "ये क्रियाएँ बालकों को अपने वैयक्तिक गुणों, क्षमताओं तथा आत्मविश्वास को विकसित करने के लिए अवसर प्रदान करती हैं।" पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन बालकों की रूचि के अनुसार करने से उनके अन्दर प्रसन्नता का बोध होता है। रूचिकर क्रियाओं का आयोजन न करने की स्थिति में बालकों के अन्दर अरूचि एवं निराशा का भाव उत्पन्न हो जाता है। शिक्षार्थियों के मानसिक थकावट व विकार को दूर करने के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने से बालकों के अन्दर निम्नलिखित गुणों को बहुत ही सरलता के साथ विकसित किया जा सकता है सत्य, ईमानदारी, आत्मविश्वास, न्यायप्रियता, धैर्य, दृढ़ता, विनय, आज्ञा पालन, सदाचार, सहिष्णुता, नेतृत्व की भावना, नागरिकता के गुणों का विकास, मूल्यों का विकास, नैतिकता का विकास इत्यादि।

उपरोक्त सभी गुणों से पूर्ण बालक को चारित्रिक रूप से सशक्त माना जाता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के द्वारा बालकों के अन्दर दूसरों की सहायता करने की भावना को आसानी से विकसित किया जा सकता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने से छात्रों का शारीरिक विकास होता है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अन्तर्गत बालकों को खेल–कूद एवं अन्य क्रियाओं में समय–समय पर भाग लेने के अवसर उपलब्ध कराने से उनके अंग–प्रत्यंग, हृष्ट–पुष्ट होते हैं। बालक शुद्ध वातावरण में शुद्ध वायु का सेवन करते हैं, जिससे उनका चित्त प्रसन्न रहता है। अतः हम कह सकते हैं कि– "प्रसन्नता स्वास्थ्य की जननी है।"

पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अवसर बालको को प्रदान करने से उनके अन्दर सामाजिक गुणों का विकास होता है जिसके कारण उनके अन्दर अच्छे चरित्र का विकास होता है। समूह के अन्दर कार्य करने से बालकों के अन्दर त्याग की भावना का विकास होता है। पाठ्य

Scanned with OKEN Scanner

सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने से छात्रों के अन्दर सत्य, निष्ठा, ईमानदारी, चरित्र ए आत्मनुशासन की भावना के विकास के साथ ही दूसरों की सेवा करने का भाव भी उत्पन्न होत है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं के माध्यम से विद्यालय के अन्दर अनुशासन स्थापित करने में बहु सहायता मिलती है।

विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को शिक्षा के साथ ही महत्वपूर्ण स्थान प्रदा करना चाहिए। इन क्रियाओं के माध्यम से समाज और विद्यालय के मध्य परस्पर अच्छ सम्बन्ध स्थापित किये जा सकते हैं। विद्यालय का प्रत्येक छात्र भी अपनी योग्यता का सर्वोत्त प्रदर्शन करते हुए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग कर सकता है। इसः दृष्टिगत रखते हुए विद्यालयों में नियमित रूप से बालकों के लिए विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ वास्तव में अध्ययन मात्र न होकर एक निरन्तर चलने वा प्रक्रिया है। इस विषय पर निरन्तर शोध एवं प्रयोग किये जाने की आवश्यकता है। नवीन प्रयो एवं अनुभवों से ही इसका वास्तविक मूल्यांकन हो सकेगा तथा इन क्रियाओं के प्रति अधि जागरूकता पैदा की जा सकेगी, ऐसा शोधकर्ता का विश्वास है। प्रस्तुत अध्ययन इन प्रक्रि का एक अंश मात्र है।

अधिकांश विद्यालयों में समय–समय पर विभिन्न प्रकार की पाठ्य सहगामी क्रियाओं आयोजन किया जाता है तथा विद्यालय अपने शिक्षार्थियों को विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक त प्रतियोगी कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं किन्तु कुछ विद्यालयों में पा सहगामी क्रियाओं की समुचित व्यस्था नहीं है। जिन विद्यालयों में खेल–कूद तथा विभिन्न वा प्रतियोगिताएं आयोजित कराने का पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं है वे अन्य शैक्षिक कार्यक्र का समय–समय पर आयोजन करते रहते हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का शारीरिक विकास तो होता है साथ ही उनमें सद्भाव, भाईचारा और सामाजिक समायोजन जैसे सद्गुणों का समावेश होता है। कतिपय विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर बहुत कम समय दिया जाता वे इन क्रियाओं के आयोजन में समय लगाना व्यर्थ समझते हैं। जब कि इन क्रियाओं का बा के प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अधिकांश विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं संचालन के लिए विशेष अध्यापक की व्यवस्था नहीं होती।

विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन में उत्पन्न वित्तीय समस्याओं समाधान के लिए विद्यालय प्रबन्धन तथा छात्रों का यथोचित सहयोग प्राप्त किया जा सकता विद्यालय में संचालित की जाने वाली विभिन्न पाठ्य सहगामी क्रियाओं की रूपरेखा प्रारम्

Scanned with OKEN Scanner

ही तैयार कर लेनी चाहिए। ऐसा करते समय उसके प्रशासन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु योजना बना लेनी चाहिए जिससे किसी आकस्मिक दुर्घटना से बचा जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. माथुर, एस.एस. : विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, शिक्षाविभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।
2. भारद्वाज, दिनेश चन्द्र ; विद्यालय प्रशासन एवं स्वास्थ शिक्षा, प्रकाशक : विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. सुखिया, एस.पी. विद्यालय संगठन एवं संगठन, भूतपूर्व सदस्या, बेसिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश, भूतपूर्व कुलपति, आगरा विश्वविद्यालय तथा अवकाश प्राप्त प्रधानाचार्या, बीमेन्स ट्रेनिंग कॉलेज दयालबाग, आगरा।

Scanned with OKEN Scanner